ISSN 2455-6033

(47)

मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट की इण्डियन लेंग्वेजेज की पत्रिकाओं में क्र.सं. 62 पर सम्मिलित

वर्ष-15 अंक: 1 (पूर्णांक - 57) मार्च-मई, 2021

मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ की त्रैमासिक शोधपत्रिका

Scanned with CamScanner

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या - RAJHIN/2007/19628
ISSN 2455-6033

मीरायन

(साहित्यिक-सांस्कृतिक त्रैमासिक शोध-पत्रिका)

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका (इण्डियन लेंग्वेजेज, क्र.सं. 62)

वर्ष-15, अंक-01 (पूर्णांक-57) मार्च-मई, 2021

सहयोग राशि

वार्षिक
व्यक्तिगत : 300.00 रुपया
संस्थागत : 400.00 रुपया
आजीवन (दस वर्षीय)
व्यक्तिगत : 3000.00 रुपया
संस्थागत : 4000.00 रुपया
सहयोग राशि मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ के पक्ष में भेजी जा सकती है।

संस्थापक सम्पादक
कीर्तिशेष स्वामी (डॉ.) ओमू आनन्द सरस्वती

सम्पादक
सत्यनारायण समदानी

कार्यालय एवं सम्पर्क-सूत्र
मीरा स्मृति संस्थान
मकान नं. 25, फ्रेण्ड्स कॉलोनी,
पार्वती गार्डन के पीछे,
सेंती, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)
मो. 094141–48537
मो. 095155–79037
ई-मेल :
samdanisatya@gmail.com

मीरायन के बैंक खाता का विवरण

1. खाता का नाम	मीरा स्मृति संस्थान (MEERA SMRITI SANSTHAN)
2. खाता संख्या	बचत खाता 51042428405
3. बैंक शाखा	भारतीय स्टेट बैंक, कलक्टरेट शाखा चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
4. IFSC	SBIN0031237

प्रकाशन-तिथि
07 जून, 2021

Designed by: उमेश अजमेरा,श्रीजी डॉट कॉम,चित्तौड़गढ़-9829079159

समस्त सम्पादकीय सहयोग अवैतनिक एवं मानद है। रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।
सभी विवाद चित्तौड़गढ़ न्यायाधिकरण क्षेत्र के अधीन होंगे।

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख/रचना	पृष्ठ
1.	**मीरा-पद**	05
1.	**सन्त मीराबाई** (1) म्हारो मन सांवरो ..... (2) राणाजी जहर दियो.....	
2.	**मीरा-प्रशस्ति**	06
2.	**श्री गोपीनाथ पारीक 'गोपेश'**, जयपुर (राजस्थान) जब धरती पर आयी मीरा	
3.	**सम्पादकीय**	07–09
3.	**प्रो. सत्यनारायण समदानी**, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) कोरोनाकाल और हमारा दायित्व	
4.	**मीरा-सन्दर्भपक्ष**	
4.	**डॉ. किशोर काबरा**, अहमदाबाद (गुजरात) कृष्ण की आराधिका : मीरा और राधिका - एक चिन्तन	10–16
5.	**डॉ. समीर कुमार पाण्डेय**, सुलतानपुर (उत्तरप्रदेश) मीराँबाई का शैक्षिक दर्शन	17–19
6.	**श्री ललित सिंह रावल**, उदयपुर (राजस्थान) मीरां का काव्य : हमारी विरासत	20–23
7.	**श्री रामसिंह सौराष्ट्रीय**, उज्जैन (मध्यप्रदेश) मीरा के काव्य में प्रतिध्वनित नारी चेतना के स्वर	24–27
5.	**सन्त-भक्तपक्ष**	
8.	**डॉ. महेशचन्द्र तिवारी**, कपासन (राजस्थान) रामस्नेही संतकाव्य की वैचारिक संपन्नता	28–34
9.	**श्री बाबूराम**, उदयपुर (राजस्थान) मध्यकालीन संत साहित्य में जसनाथी सम्प्रदाय	35–39
10.	**डॉ. सलिल कुमार पाण्डेय**, गोरखपुर (उत्तरप्रदेश) जीवन प्रबन्धन में गोरखवाणी की प्रासंगिकता	40–43
6.	**इतिहास/ पुरातत्व/प्राच्य चिन्तन पक्ष**	
11.	**श्री उपेन्द्रनाथ राय**, मेटेली (प.बंगाल) रंग, नस्ल और वर्ण	44–51

Scanned with CamScanner

रामस्नेही संत काव्य की वैचारिक संपन्नता

- डॉ. महेश चंद्र तिवारी

हिन्दी साहित्य का विद्यार्थी जब साहित्य का अध्ययन करना प्रारम्भ करता है तो पाता है कि मोटे तौर पर चार भागों–आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल में विभाजित हिन्दी के साहित्य में से भक्तिकाल को कमोवेश सभी साहित्येतिहासकार स्वर्णयुग मानते हैं। "हिन्दी साहित्य के संदर्भ में भक्तिकाल से तात्पर्य उस काल से है, जिसमें मुख्यतः भागवत धर्म के प्रचार तथा प्रसार के परिणामस्वरूप भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात हुआ और इसकी लोकोन्मुखी प्रवृत्ति के कारण धीरे-धीरे लोक प्रचलित भाषाएँ भक्ति भावना की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती गई और कालान्तर में भक्ति विषयक विपुल साहित्य की बाढ़ आ गई।"[1]

इस भक्ति आन्दोलन के बीजारोपण के लिए हमें दो मत मिलते हैं। प्रथम, जो कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल मानते हैं- "अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था?"[2] द्वितीय, जैसा कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी सहित अनेक विद्वान स्वीकार करते हैं कि इस भक्ति आन्दोलन के बीज तो आदिकाल ही से भारतीय जनमानस में पड़े, जो समय व परिवेश पाकर प्रस्फुटित, पल्लवित व पुष्पित ही नहीं फलीभूत भी हुए। सार रूप में विश्वनाथ जी त्रिपाठी के शब्दों में कहा जा सकता है कि "भक्ति आन्दोलन की विशेषता यह बताई गई है कि इसमें धर्म साधना का नहीं भावना का विषय बन गया है।"[3]

सहज विचारणीय है कि व्यक्तिगत स्तर पर ही निरन्तर रहने वाली साधना कैसे भावना का न केवल विषय बन गई, वरन एक ऐसा सामाजिक आन्दोलन बन गई कि उसके प्रभाव में इतना उत्कृष्ट साहित्य लिखा गया कि यही भावनात्मक साहित्य भक्तिकालीन साहित्य भी कहलाया और हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग भी। तो यह तो अवश्यम्भावी है कि व्यक्तिगत साधना का सामाजिक भावना बन जाना और वह भी देश के इतने बड़े भू-भाग में और इतनी सघनता और प्रखरता से कोई आकस्मिक घटना न होकर एक बहुत लम्बी प्रक्रिया की स्वाभाविक परिणति है। आदिकाल से प्रारम्भ हुए और भक्तिकाल में भी निरन्तर रहे विविध भक्ति सम्प्रदाय जिम्मेदारी के भाव से इस भक्ति आन्दोलन का उत्तरदायित्व निर्वहन करते रहे थे। ऐसे सम्प्रदायों में प्रमुख हैं – वज्रयान सम्प्रदाय, गोरखपंथ, बाबा नामदेव सम्प्रदाय, कबीर पंथ, धर्मदासी सम्प्रदाय, रैदासी सम्प्रदाय, नानक पंथ आदि।

किसी सन्त सम्प्रदाय का मन में विचार आते ही बहुधा हमें कबीर का 'मसि कागज़ छुयो नहिं' का स्मरण हो आता है और साथ ही एक स्वाभाविक सी भ्रान्ति भी घर करने लगती है कि बिना व्यवस्थित शास्त्रज्ञान की भावधारा होने से इसका कोई वैचारिक आधार भी कैसे होगा? लेकिन संत-मतों का गहन अवगाहन न केवल इस भ्रान्ति को खंडित कर देता है, वरन सन्त परम्परा की गहराई से भी हमें अवगत करा देता है।

"कब देखूँ मेरे रामस्नेही, जा बिन दुख पावै मेरी देही" कहने वाले कबीर भी कहाँ जानते रहे होंगे कि उनके द्वारा उपयोग में लिया गया 'रामस्नेही' शब्द कालान्तर में इतना उपयुक्त प्रतीत होगा कि इसी नाम के तीन चार सम्प्रदाय प्रचलन में हो जाएंगे। वर्तमान में इस एक ही नाम से तीन सम्प्रदाय प्रचलन में हैं- रेण का रामस्नेही सम्प्रदाय, शाहपुरा का रामस्नेही सम्प्रदाय और सींथल खेड़ापा का रामस्नेही

Scanned with CamScanner